मधुबन ओम् शान्ति अंक 370 मई 2023

पत्र-पुष्प

"मंसा सेवा करने के लिए शुद्ध संकल्पों का स्टॉक जमा करो, शुभ भावनाओं से सम्पन्न बनो" (20-04-23)

प्राणप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, सदा शुद्ध संकल्पों के स्टाक से भरपूर, अपनी शक्तिशाली मन्सा द्वारा सर्व आत्माओं को शुभ भावना की सकाश देने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - समय प्रमाण बापदादा का विशेष इशारा है कि बच्चे वाचा सेवा के साथ-साथ विशेष मन्सा सेवा को अब नेचुरल बनाओ। मन्सा की शक्तिशाली सेवा सफलता ज्यादा अनुभव करायेगी क्योंकि वर्तमान समय चारों ओर इच्छायें बढ़ रही हैं, हद की इच्छाओं के कारण आत्मायें परेशान हैं। ऐसे समय पर आप बच्चे अपनी बेहद की वैराग्य वृत्ति द्वारा उन आत्माओं में भी वैराग्य वृत्ति फैलाओ। वैराग्य वृत्ति के वायुमण्डल के बिना आत्मायें सुखी, शान्त बन नहीं सकती, परेशानी से छूट नहीं सकती। अभी स्व परुषार्थ को इतना तीव्र बनाओ जो आपके वायब्रेशन से, वृत्ति से, शुभ भावना से दूसरे की माया सहज भाग जाये। आपकी मूर्त, आपकी वृत्ति, आपकी दृष्टि आत्मा को परिवर्तन कर ले। हाय-हाय करते आवें और वाह-वाह लेकर जायें। इसके लिए अपनी मन्सा समर्थ स्थिति का प्रोग्राम सेट करो। जितना अपने मन को समर्थ संकल्पों में बिजी रखेंगे तो मन कभी अपसेट नहीं होगा, सहज एकाग्र हो जायेगा, जिससे स्वत: अच्छे वायब्रेशन फैलेंगे।

बोलो, ऐसा ही लक्ष्य रख विशेष एकाग्रता का अभ्यास करते मन्सा शुभ भावना द्वारा सर्व आत्माओं को लाइट माइट देने की सेवा कर रहे हो ना! इस वर्ष स्व-उन्नति और सेवाओं निमित्त जो विशेष बुलेटिन आपके पास भेजी गई है, उसी प्रमाण सभी को रेस करनी है। अब अपनी श्रेष्ठ शक्तिशाली स्थिति द्वारा विश्व के कोने-कोने में परमात्म प्रत्यक्षता का झण्डा लहराना है।

बाबा कहते बच्चे, अभी आप सभी ब्राह्मणों को बेहद की वृत्ति, बेहद की दृष्टि वाला बनना है। हद का नाम-निशान भी समाप्त हो जाए क्योंकि वृत्ति से वायुमण्डल बनता है और वायुमण्डल बनेगा तो प्रैक्टिकल में भी होगा। इसके लिए सदा अच्छा-अच्छा सोचने की आदत डालो। अच्छा सोचने से सब अच्छा ही होगा क्योंकि आपकी अच्छी वृत्ति वायुमण्डल को परिवर्तन करेगी। अगर क्यों-क्या में जायेंगे–ऐसा है, ऐसा है तो कभी परिवर्तन नहीं होगा। अच्छा-अच्छा कहते जाओ तो अच्छे बन जायेंगे। अपनी मन्सा वृत्ति सदा अच्छे की, पावरफुल बनाओ तो खराब भी अच्छा हो जायेगा।

बाकी मधुबन बेहद घर का समाचार तो आप सब सुनते रहते हो। यहाँ हर स्थान पर बाबा के नये पुराने अनेकानेक बच्चे आते स्वयं को खूब भरपूर कर रहे हैं। एक तरफ तपस्या भट्ठियों की लहर है तो दूसरी ओर विंग्स के प्रोग्राम तथा राजयोग शिविर आदि चल रहे हैं। आने वाले सभी बाबा के बच्चे बहुत अच्छी अनुभूतियां करके जाते हैं। यह भी अव्यक्त वतनवासी बाबा की कमाल है जो गुप्त रीति से बच्चों द्वारा अपना कार्य सम्पन्न करा रहे हैं।

अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.रतनमोहिनी

ये अव्यक्त इशारे

अब अपनी श्रेष्ठ मन्सा द्वारा सूक्ष्म वृत्तियों से सेवा करो

1) सेवा का सबसे सहज साधन है - वृत्ति द्वारा वायब्रेशन बनाना और वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल बनाना। जैसे साइंस की राकेट फास्ट जाती है वैसे आपकी रूहानी शुभ भावना, शुभ कामना की वृत्ति दृष्टि और सृष्टि को बदल देती है। एक स्थान पर बैठे भी वृत्ति द्वारा सेवा कर सकते हो।

2) जैसे मधुबन का वायुमण्डल हर एक के दिल में छप जाता है, ऐसे हर एक को अपनी श्रेष्ठ रूहानी वृत्ति से वायब्रेशन और वायुमण्डल बनाना है। लेकिन वृत्ति रूहानी और शक्तिशाली तब होगी जब अपने दिल में किसी के प्रति भी उल्टी वृत्ति का वायब्रेशन नहीं होगा। अपने मन की वृत्ति स्वच्छ चाहिए। अगर वृत्ति निगेटिव है, मन में किचड़ा है तो शुभ वृत्ति से सेवा नहीं कर सकेंगे।

3) आप विश्व कल्याणकारी बच्चे नॉलेजफुल बनो, कोई रांग है तो उसे रांग भल कहो लेकिन उनकी रांग बातों को मन में नहीं बिठाओ। कोई भी रांग बात अपनी वृत्ति में रखेंगे तो दृष्टि और सृष्टि बदल जायेगी, और मन की वृत्ति में अगर खराब चीज़ वा वेस्ट थॉट्स होंगे तो विश्व कल्याणकारी कैसे बन सकेंगे!

4) अभी समय प्रमाण वृत्ति से वायुमण्डल बनाने के तीव्र पुरुषार्थ की आवश्यकता है इसलिए वृत्ति में जरा भी किचड़ा न हो, तब प्रकृति तक आपका वायब्रेशन जायेगा और वायुमण्डल बनेगा इसलिए हरेक की विशेषताओं को देखो और अपनी वृत्ति को सदा शुभ रखो। इसके लिए याद रखो कि ''दुआ देना है और दुआ लेना है।'' कोई भी निगेटिव बात एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल दो।

5) आप क्षमा के सागर के बच्चे हो तो परवश आत्माओं को क्षमा दे दो। अपनी शुभ वृत्ति से ऐसा वायुमण्डल बनाओ जो कोई भी आपके सामने आये वह कुछ न कुछ स्नेह ले, सहयोग ले, क्षमा का अनुभव करे, हिम्मत का, उमंग-उत्साह का अनुभव करे।

6) विश्व कल्याणकारी की स्टेज है - सदा बेहद की वृत्ति, दृष्टि और बेहद की स्थिति। वृत्ति में ज़रा भी किसी आत्मा के प्रति निगेटिव या व्यर्थ भावना नहीं हो। दूसरे के निगेटिव को भी पॉजिटिव में चेंज कर दो। आपकी वृत्ति सर्व के प्रति सदा बेहद और कल्याणकारी हो।

7) जैसे मधुबन में ब्रह्मा बाप के कर्म साकार में होने के कारण इस भूमि में तपस्या, कर्म और त्याग के वायब्रेशन समाये हुए हैं इसलिए यहाँ हर एक सहज अनुभव करते हैं कि यह संसार न्यारा है। ऐसे आप बच्चे भी जहाँ रहते हो, जो आपका कर्मक्षेत्र है वहाँ आप द्वारा बाप समान गुण, कर्म और श्रेष्ठ वृत्ति का वायुमण्डल अनुभव में आये।

8) चारों ओर इच्छायें बढ़ रही हैं, इच्छाओं के वश आत्मायें परेशान हैं, चाहे पदमपति भी हैं लेकिन इच्छाओं से वह भी परेशान हैं। वायुमण्डल में आत्माओं की परेशानी का विशेष कारण यह हद की इच्छायें हैं। अब आप अपने बेहद की वैराग्य वृत्ति द्वारा उन आत्माओं में भी वैराग्य वृत्ति फैलाओ। आपके वैराग्य वृत्ति के वायुमण्डल के बिना आत्मायें सुखी, शान्त बन नहीं सकती, परेशानी से छूट नहीं सकती।

9) मैं ब्रह्मचारी तो रहता हूँ, पवित्रता का पालन तो करता हूँ,... सिर्फ इसमें खुश नहीं हो जाओ। अभी दृष्टि-वृत्ति की पवित्रता पर और अण्डरलाइन करो। मूल फाउण्डेशन है अपने संकल्प को शुद्ध बनाओ, ज्ञान स्वरूप बनाओ, शक्ति स्वरूप बनाओ, वृत्तियों को शुभ भावना से सम्पन्न बनाओ। सबका भला हो यह वृत्ति धारण करो तब आपको सब अपना मानेंगे।

10) अब स्व पुरुषार्थ में तीव्र बनो तब आपके वायब्रेशन से, वृत्ति से, शुभ भावना से दूसरे की माया सहज भाग जायेगी। अगर क्यों, क्या में जायेंगे, तो न आपकी माया जायेगी, न दूसरे की जायेगी। आपकी मूर्त, आपकी वृत्ति, आपकी दृष्टि आत्मा को परिवर्तन कर ले। हाय-हाय करते आवें और वाह-वाह लेकर जायें।

11) सर्व के सम्बन्ध-सम्पर्क में आते जितना न्यारा, उतना प्यारा – इसका बैलेन्स रहे। बेहद की वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल हो। यह बेहद के वैरागी हैं, यह वृत्ति हर एक के दिमाग तक

नहीं, दिल तक पहुँचे, अब इसकी आवश्यकता है, इससे ही आत्मायें समीप आयेंगी। मुख की सेवा सम्पर्क में लाती है, वृत्ति से वायुमण्डल की सेवा समीप लायेगी।

12) आत्माओं को योग्य और योगी बनाना है, धरनी को तैयार करना है तो विशेष वाणी के साथ-साथ वृत्ति को और तीव्र गति देनी पड़ेगी क्योंकि वृत्ति से वायुमण्डल बनेगा और वायुमण्डल का प्रभाव प्रकृति पर पड़ेगा तब तैयार होंगे। तो डबल सेवा का सदा अटेन्शन रखो।

13) अगर श्रेष्ठ भावना, श्रेष्ठ कामना की वृत्ति है तो सेकण्ड के संकल्प से, दृष्टि से अपने दिल के मुस्कराहट से सेकण्ड में भी किसी को बहुत कुछ दे सकते हो। जो भी आवे उसको कोई न कोई गिफ्ट जरूर दो, कोई भी खाली हाथ नहीं जावे।

14) वर्तमान समय के प्रमाण अभी अपनी सेवा वा सेवा-स्थानों की दिनचर्या बेहद के वैराग्य वृत्ति की बनाओ। अभी आराम की दिनचर्या मिक्स हो गई है। ये अलबेलापन शरीर की छोटी-छोटी बीमारियों के भी बहाने बनाता है। सेवा का उमंग बीमारी को भी मर्ज कर देता है।

15) हर व्यक्ति को, बात को पॉजिटिव वृत्ति से देखो, सुनो या सोचो। जैसे साइन्स के ऐसे साधन निकले हैं जो रफ़ माल को भी बहुत सुन्दर रूप में बदल देते हैं। ऐसे कोई भी निगेटिव रूप में आवे आप उस निगेटिव को पॉजिटिव वृत्ति से बदल दो। क्यों, क्या, कैसे की हलचल में नहीं आओ।

16) युनिटी का अर्थ है बेहद की वृत्ति, बेहद की दृष्टि। अगर बेहद की दृष्टि और वृत्ति नहीं तो युनिटी नहीं हो सकती। सभी ब्राह्मण बेहद की वृत्ति, दृष्टि वाले बन जायें तो अपना राज्य आया कि आया क्योंकि वृत्ति से वायुमण्डल बनेगा और वायुमण्डल बनेगा तो प्रैक्टिकल में भी होगा।

17) सदा अच्छा-अच्छा सोचने से अच्छा हो ही जाता है क्योंकि आपकी अच्छी वृत्ति वायुमण्डल को परिवर्तन कर देगी। अगर क्यों-क्या में जायेंगे–ऐसा है, ऐसा है तो कभी परिवर्तन नहीं होगा। अच्छा-अच्छा कहते जाओ तो अच्छे बन जायेंगे। अपनी मन्सा वृत्ति सदा अच्छे की, पावरफुल बनाओ तो खराब भी अच्छा हो जायेगा।

18) जैसे बापदादा को रहम आता है, ऐसे आप बच्चे भी मास्टर रहमदिल बन मन्सा अपनी वृत्ति से वायुमण्डल द्वारा आत्माओं को बाप द्वारा मिली हुई शक्तियां दो। जब थोड़े समय में सारे विश्व की सेवा सम्पन्न करनी है, तत्वों सहित सबको पावन बनाना है तो तीव्र गति से सेवा करो।

19) कोई भी यह नहीं कह सकता कि हमको तो सेवा का चान्स नहीं है। कोई बोल नहीं सकते तो मन्सा वायुमण्डल से सुख की वृत्ति, सुखमय स्थिति से सेवा करो। तबियत ठीक नहीं है तो घर बैठे भी सहयोगी बनो, सिर्फ मन्सा में शुद्ध संकल्पों का स्टॉक जमा करो, शुभ भावनाओं से सम्पन्न बनो।

20) अपनी शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना, श्रेष्ठ वृति, श्रेष्ठ वायब्रेशन द्वारा किसी भी स्थान पर रहते हुए मन्सा द्वारा अनेक आत्माओं की सेवा कर सकते हो। इसकी विधि है - लाइट हाउस, माइट हाउस बनना। इसमें स्थूल साधन, चान्स वा समय की प्राब्लम नहीं है। सिर्फ लाइट-माइट से सम्पन्न बनने की आवश्यकता है।

21) मन्सा वृत्तियों से वायुमण्डल का परिवर्तन करने के लिए मन, बुद्धि व्यर्थ सोचने से मुक्त होना चाहिए। 'मनमनाभव' के मन्त्र का सहज स्वरूप होना चाहिए। जिन श्रेष्ठ आत्माओं की श्रेष्ठ मन्सा अर्थात् संकल्प शक्तिशाली है, शुभ-भावना, शुभ-कामना वाले हैं वह मन्सा द्वारा शक्तियों का दान दे सकते हैं।

22) मन्सा शक्ति का दर्पण है - बोल और कर्म। चाहे अज्ञानी आत्मायें, चाहे ज्ञानी आत्मायें - दोनों के सम्बन्ध-सम्पर्क में बोल और कर्म शुभ-भावना, शुभ-कामना वाले हों। जिसकी मन्सा शक्तिशाली वा शुभ होगी उसकी वाचा और कर्मणा स्वत: ही शक्तिशाली शुद्ध होगी, शुभ-भावना वाली होगी। मन्सा शक्तिशाली अर्थात् याद की शक्ति श्रेष्ठ होगी, शक्तिशाली होगी, सहजयोगी होंगे।

23) जैसे अपने स्थूल कार्य के प्रोग्राम को दिनचर्या प्रमाण सेट करते हो, ऐसे अपनी मन्सा समर्थ स्थिति का प्रोग्राम सेट करो तो कभी अपसेट नहीं होंगे। जितना अपने मन को समर्थ संकल्पों में बिजी रखेंगे तो मन को अपसेट होने का समय ही नहीं मिलेगा। मन सदा सेट अर्थात् एकाग्र है तो स्वत: अच्छे वायब्रेशन फैलते हैं। सेवा होती है।

24) हर समय, हर आत्मा के प्रति मन्सा स्वत: शुभभावना और शुभकामना के शुद्ध वायब्रेशन वाली स्वयं को और दूसरों को अनुभव हो। मन से हर समय सर्व आत्माओं प्रति दुआयें निकलती रहें। मन्सा सदा इसी सेवा में बिजी रहे। जैसे वाचा की सेवा में बिजी रहने के अनुभवी हो गये हो। अगर सेवा नहीं मिलती तो अपने को खाली अनुभव करते हो। ऐसे हर समय वाणी के साथ-साथ मन्सा सेवा स्वत: होती रहे।

25) जैसे वाचा सेवा नेचुरल हो गई है, ऐसे मन्सा सेवा भी साथ-साथ और नेचुरल हो। वाणी के साथ मन्सा सेवा भी करते रहो तो आपको बोलना कम पड़ेगा। बोलने में जो एनर्जी लगाते हो वह मन्सा सेवा के सहयोग कारण वाणी की एनर्जी जमा होगी और मन्सा की शक्तिशाली सेवा सफलता ज्यादा अनुभव करायेगी।

26) जितना अभी तन, मन, धन और समय लगाते हो, उससे मन्सा शक्तियों द्वारा सेवा करने से बहुत थोड़े समय में सफलता ज्यादा मिलेगी। अभी जो अपने प्रति कभी-कभी मेहनत करनी पड़ती है – अपनी नेचर को परिवर्तन करने की वा संगठन में चलने की वा सेवा में सफलता कभी कम देख दिलशिकस्त होने की, यह सब समाप्त हो जायेगी।

27) अभी मन्सा की क्वालिटी को बढ़ाओ तो क्वालिटी वाली आत्मायें समीप आयेंगी। इसमें डबल सेवा है - स्व की भी और दूसरों की भी। स्व के लिए अलग मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। प्रालब्ध प्राप्त है, ऐसी स्थिति अनुभव होगी। इस समय की श्रेष्ठ प्रालब्ध है ''सदा स्वयं सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न रहना और सम्पन्न बनाना''।

28) जितना स्वयं को मन्सा सेवा में बिज़ी रखेंगे उतना सहज मायाजीत बन जायेंगे। सिर्फ स्वयं के प्रति भावुक नहीं बनो लेकिन औरों को भी शुभ भावना और शुभ कामना द्वारा परिवर्तित करने की सेवा करो। भावना और ज्ञान, स्नेह और योग दोनों का बैलेन्स हो। कल्याणकारी तो बने हो अब बेहद विश्व कल्याणकारी बनो।

29) मन्सा-सेवा बेहद की सेवा है। जितना आप मन्सा से, वाणी से स्वयं सैम्पल बनेंगे, तो सैम्पल को देखकर के स्वत: ही आकर्षित होंगे। सिर्फ दृढ़ संकल्प रखो तो सहज सेवा होती रहेगी। वाणी द्वारा ज्ञान दान मैजॉरिटी करते हो लेकिन अब मन्सा द्वारा शक्तियों का दान करो, कर्म द्वारा गुण दान करो।

30) कोई भी स्थूल कार्य करते हुए मन्सा द्वारा वायब्रेशन्स फैलाने की सेवा करो। जैसे कोई बिजनेसमेन है तो स्वप्न में भी अपना बिजनेस देखता है, ऐसे आपका काम है – विश्व-कल्याण करना। यही आपका आक्यूपेशन है, इस आक्यूपेशन को स्मृति में रख सदा सेवा में बिजी रहो।

31) सबसे पॉवरफुल और सबसे बड़े से बड़ी सेवा मन्सा सेवा है, इसके लिए अपने को पॉवरफुल बनाओ। अगर मन्सा थोड़ा भी कमज़ोर है तो मन्सा सेवा नहीं हो सकती। वाणी की कर सकते हो। तो अब मन्सा, वाचा, कर्मणा सब प्रकार की सेवा करो तब फुल मार्क्स ले सकेंगे।

(त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* *मधुबन*

“अपने ऊंचे स्वमान में रहो तो हर समस्या वा विघ्न छोटे दिखाई देंगे, तूफान भी तोहफा बन जायेगा”

(गुल्जार दादी - 20-3-07)

सभी को रूहानी नशा व स्मृति रहती है कि हमारे जैसा भाग्य तो देवताओं का भी नही है, भले हम ही जाकर देवता बनेंगे। सारे कल्प में संगमयुग ही विशेष युग है। संगमयुग में ही बाबा आकर हमें बाप, टीचर, सतगुरू के रूप में मिलता है। सतयुग में ब्रह्मा बाबा हमारे साथ ही होंगे परन्तु शिवबाबा साक्षी होकर देखेंगे। ब्राह्मणों को सदा चोटी पर दिखाते हैं। चोटी क्यों दिखाते हैं? क्योंकि ऊंच ते ऊंच प्राप्तियाँ एवं ऊंच ते ऊंच स्वमान हमें अभी बाप द्वारा मिलते हैं। जैसे ऊंच ते ऊंच भगवान है, ऐसे ही हम बच्चे भी ऊंचे ते ऊंच ही हैं। आप सभी बाबा की आशाओं के दीपक हो ना! वैसे राजा बनना कोई बड़ी बात नहीं है परन्तु अभी हरेक बच्चा अपने मन, बुद्धि व संस्कारों का राजा बने। दादी ने भी वतन में बाबा को बताया कि ''मेरा यह लक्ष्य रहा कि मेरा पुरुषार्थ निर्विघ्न व निर्विकल्प रहे''। आप हरेक के प्रति शुभ भावना व शुभ कामना रखो, अपने स्वमान में

रहो तथा निर्विघ्न व निर्विकल्प रहो। तूफान तो आयेंगे ही परन्तु ऐसा पुरुषार्थ करो कि तूफान तोहफा बन जायें। जैसे राजा के पास कन्ट्रोलिंग व रूलिंग पॉवर होती है। अत: कोई भी समस्या आए, विघ्न आए, विकल्प आयें, ये सब उसके आगे एक बच्चा है, अत: उन पर विजय प्राप्त करनी है। कई बच्चे कहते हैं दादी जी आपको क्या पता बात ही ऐसी थी, ऐसी समस्या तो कभी आई ही नहीं। अरे, आप भगवान के बच्चे मास्टर भगवान, तो भगवान से भी कोई बात ऊंची होती है क्या? जैसे हम हवाई जहाज में यात्रा करते हैं तो पहाड़ आदि सब चीज़ें छोटी दिखाई देती हैं। नेपाल जाते हैं तो हिमालय की चोटी भी छोटी दिखाई देती है। इसी प्रकार हम भगवान के बच्चे हैं, राजा हैं तो हर समस्या, विघ्न, पुराने संस्कार छोटे दिखाई देंगे। यहाँ आजकल राजा तो नहीं है परन्तु कुर्सी के राजा हैं। वो भी जो ऑर्डर करते हैं सबको मानना पड़ता है। क्या पुराने संस्कार, खराब चीज़, सम्भाल कर रखते हैं? वन्डरफुल चीज़ को म्यूजियम में रखते हैं। क्या ये पुराने संस्कार वन्डरफुल हैं, अनादि हैं, जो खिट-खिट करते हैं? बाबा की हम बच्चों से आश है कि ये पुराने संस्कार न रहें बल्कि अनादि आदि संस्कार इमर्ज हो जायें। सतयुग में इन संस्कारों की खिट-खिट कहाँ है? यह जो खिट-खिट करते हैं यह मध्य के संस्कार हैं। देवी-देवता बनना है ना, तो अनादि व आदि के संस्कारों को इमर्ज करो व अपनाओ। बीच के संस्कारों को बीच में ही समाप्त कर दो। नशा रखो कि मैं बाबा के साथ परमधाम में समीप की आत्मा हूँ। हम भगवान के साथ रहते हैं तो इसका नशा सदा रखना है। शुरू में हम छोटे-छोटे आये थे बाबा के घर में, बोर्डिंग में रहे थे। फिर तो बाबा के बन गये। हमारे रिश्तेदार हमें बुलाते थे घर आ जाओ, तो हम कहते थे हम तो विश्व-कल्याणकारी बन गये हैं तो वह हम पर हंसते थे। सोचते थे यह छोटे-छोटे बच्चे क्या विश्व-कल्याणकारी बनेंगे? यहाँ आपको तो विश्वास है ना कि हम विश्व कल्याणकारी हैं? हम उन्हें कहते थे कि 5 पाण्डव थे, उनकी जीत हुई ना। क्या आपको महाभारत पर विश्वास नहीं है? हम अन्दर समझते थे हम तो 80 हैं हमारी जीत अवश्य होगी। हमने विश्व का नक्शा भी नहीं देखा था, फिर भी हमको निश्चय था, नशा था कि हम विश्व कल्याणकारी बनेंगे। हम बाबा से रोज़ मिलते थे। एक दिन मैंने बाबा से पूछा कि बाबा हमने तो विश्व का नक्शा भी नहीं देखा है, तो हम विश्व कल्याणकारी कैसे बनेंगे? बाबा ने कहा बच्ची, यह बाबा ने कहा है, भगवान का वरदान है यह एक दिन प्रैक्टिकल में अवश्य होना है। तो आज हम देखते हैं कि कैसे पांचों खण्ड, अभी छोटे से लगते हैं। बाबा बार-बार हमें नशा चढ़ाता है परन्तु धीरे-धीरे नशा व निश्चय हट जाता है। जब कोई संस्कार उछल मारता है या समस्या आती है तो उस समय हम भूल जाते हैं कि हम भगवान के बच्चे हैं। नशा हट जाता है, निश्चय टूट जाता है। जैसे हम निश्चय व नशे के आधार से भाषण करते हैं तो होशियार हो जाते हैं। इसी प्रकार सदा निश्चय व नशा रखो कि हम भगवान, सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे हैं, तो माया आ नहीं सकती है। कई कहते हैं कि दादी जी बात ही ऐसी थी ना। अरे, फिर ज्ञान की तलवार किसलिए है? क्या म्यान में रखने के लिए है? बातें तो आयेंगी परन्तु हमें उन्हें पास करना है।

आज साइंस वाले, प्रकृति वाले भी घबराते हैं और कहते हैं कि पता नहीं क्या-क्या हो रहा है और होने वाला है? हम तो नहीं घबराते हैं ना क्योंकि हमें पता है कि यह सब तो होना ही है। आज दुनिया में क्या-क्या लगा पड़ा है। असेम्बली भी जैसे युद्ध का मैदान हो गई है। एक दो पर कुर्सी, पेपरवेट आदि फेंक रहे हैं, गेंद की बजाए। एक विदेशी साइंसदान ने एक वीडियो फिल्म में दिखाया कि कैसे आकाश से एक एक तारा गिरेगा, तो सोचो क्या हाल होगा? एक बिजली गिरती है तो क्या से क्या हो जाता है। हमें तो बाबा ने पहले से ही सावधान कर दिया है कि हमको तो जाना ही है। हम यहाँ थोड़ेही बैठे रहेंगे? क्या आप सोचते हो कि थोड़ा खा पी लें, आराम कर लें, थोड़ा मान-शान ले लें? पर क्या ये शान की, नशे की सीट है? क्या यह बड़ापन है? जितना बड़ा आदमी होता है, उतना उसकी खातिरी व ध्यान भी रखा जाता है। तुम्हें सदा नशा भी चढ़ाना है, स्थूल व सूक्ष्म दोनों। तुम्हें कोई भी हद की आश नहीं रखनी है। हाँ, बाबा की आशाओं के दीपक अवश्य बनना है। बाबा को अपने दिलतख्त पर बिठाना है और स्वयं भी बाबा के

दिल तख्त पर बैठना है तभी भविष्य राज तख्त के लायक बनेंगे। बाबा के बुलावे पर यहाँ आये हो ना। किसी दीदी या दादी के बुलावे पर तो नहीं! कई कहते हैं हमें दादी से बहुत प्यार है, तो दादी के दो शब्द निर्विघ्न व निर्विकल्प जीवन अपनानी है। कईयों ने दादी जी के साथ अपने फोटो भी खिंचवाये हुए हैं। अब डबल रिटर्न देना है, बाबा को भी और दादी को भी, तभी डबल ताज मिलेगा। दादी ने दूसरी शिक्षा दी एकनामी और एकॉनामी। एकनामी तभी बन सकते हैं जब एकॉनामी करेंगे। किसमें? व्यर्थ व निगेटिव संकल्पों में। आज बाबा ने मुरली में 2 घण्टे याद करने वालों से हाथ भी उठवाया। यहाँ भी कईयों ने हाथ उठाया। आप लोग अमृतवेला 45 मिनट करते हो फिर दिन में एक घण्टा बाबा की याद यह कम है। बाबा ने तो यह एक पेपर लिया है। बाबा ने हमें 8 घण्टे याद का चार्ट रखने के लिए कहा हुआ है। 8 बारी दिन में ड्रिल करने के लिए अव्यक्त मुरली में भी बापदादा ने कहा है। 15-20 मिनट की 5 धामों की ड्रिल एकरस करो। बीच-बीच में टूटे नहीं तो स्थिति एकरस हो जायेगी। अगर सचमुच व सच्चे दिल से अटेन्शन रख यह ड्रिल करें तो बाबा से लिंक जुट जायेगा। जैसे कोई मीठा गुलाबजामुन खाते हैं तो अच्छा लगता है ना और उसका टेस्ट भी मुँह में रहता है ना। ठीक इसी प्रकार यदि हमारा योग बाबा से लग जाए तो कुछ तो उसका प्रभाव हमारे पर रहेगा ना। जरुरी नहीं कि अपना चार्ट आप रोज़ रात्रि को ही चेक करो, दिन में अटेन्शन दे चेक एवं चेन्ज करते रहो तो आदत पक्की हो जायेगी। बाबा की कोई भी श्रीमत को ले लो। बाबा की आशा है कि मेरी आशाओं के दीपक बनो।

कई जो अचानक शरीर छोड़कर चले गये हैं बाबा उन्हें वतन में इमर्ज कर मिलाता है और उन्हें देखकर तरस पड़ता है जब वे कहते हैं कि हमने उस समय पुरुषार्थ क्यों नहीं किया? अन्त समय दो लाइन लगेगी। एक पश्चाताप की और दूसर प्राप्ति वालों की। जब प्राप्ति वाले के आगे पश्चाताप वाला आयेगा तो उसका क्या हाल होगा? अभी तो कई बच्चे खाने-पीने आदि में मस्त हैं। कई कहते हैं कि वह महारथी भी गलती कर रहे हैं। अच्छा महारथी ने गलती की तो उस समय वह महारथी कहाँ रहा? यदि महारथी की स्टेज होती तो गलती ही नहीं होती। अभी देखो किसी के स्वप्न में भी था कि दादी जी चली जायेगी! अभी कोई भी कभी भी जा सकता है, समय बदल गया है। कहते हैं गंगा का तट हो, गंगा जल मुख में हो तब प्राण तन से निकलें। जैसे जब मकान बनाते हैं और सेन्टर पक्का हो जाता है तो बल्लियों आदि का सहारा निकाल देते हैं। इसी प्रकार जब हम सम्पन्न हो जायेंगे तो जो लाठियों आदि के सहारे लिए हुए हैं, उन्हें निकालना पड़ेगा। तो महारथी की गलतियों की लाठियों के सहारे निकाल दो। बाबा बाबा कहते अपने पर अटेन्शन रखो। बाबा तो शिक्षा देंगे, करना तो हम बच्चों को ही है ना। जो करेगा सो पायेगा। अपना पुरुषार्थ आपेही करना है। जब धर्मराज पुरी में जायेंगे तो उस समय ब्रह्माबाबा देखता रहेगा, कुछ नहीं करेगा। पढ़ाने वाला टीचर पेपर के समय बच्चों की कोई मदद नहीं करता, इसलिए अभी से सब कुछ करना है। अभी जो भाग्य मिला है उस पर पूरा अटेन्शन देना है। अभी जो सेवा मिली हुई है, उसकी चिन्ता नहीं हो। स्थूल यज्ञ में मुट्ठी भर स्वाहा करते तो उसका भी पुण्य मानते हैं। यज्ञ सेवा का महत्व है। सेवा चाहे दीदी दादी ने दी है, सदा यही समझो कि यज्ञ पिता की आज्ञा मान कर यज्ञ सेवा कर रहा हूँ। इसका भी नशा, निश्चय और उमंग-उत्साह रखो। अटेन्शन देकर अच्छी ते अच्छी सेवा करते रहो तो हमारा भाग्य जमा होता रहेगा। बाबा चाहते हैं सभी खुश रहें। मन की गति को और कोई नहीं जानता है, आप स्वयं ही जानो। हरेक अपने से पूछो मैं आधा घण्टा योग में बैठा, योग लगाया या युद्ध किया? अपना चेकर खुद बनो। यह नशा रखो कि हम ही कल्प-कल्प की विजयी आत्मा हैं। महावीर बने हैं और बनेंगे। सुनना तो सहज है, अभी बनना है और तीव्र पुरुषार्थ करना है। व्यर्थ की बातें नहीं सुनो। कोई सुनाये तो उस समय अपने से पूछो कि क्या मैं किचड़े का डिब्बा हूँ जो मुझे सुनाते हैं? ड्रामा की बिन्दी लगाने की प्रैक्टिस करते करते फुलस्टॉप लगाना पक्का हो जायेगा। डबल फारेनर्स ओ.के.। ओ.के. के बीच में लाइन नहीं डालना। सदा यह गीत गाते रहो वाह बाबा वाह! वाह मेरा भाग्य, वाह ड्रामा वाह! अच्छा।

दादी जानकी जी द्वारा उच्चारित अनमोल वचन

"अन्तर्मुखी बन अपना रिकार्ड अच्छा और चरित्र ऊंचा बनाओ तब योग लगेगा"

(22-7-06)

बाबा ने कहा दान वो करता है जो श्रीमत पर चलता है। दानी, महादानी, फिर वरदानी। पहले बनो दानी, जिसको दानी बनने की आदत पड़ जाती है वो फिर छिपके भी दान करता है। आवाज में नहीं आता हैं। गुप्त का महत्व समझता है। ज्ञान भी गुप्त, योग भी गुप्त, फिर धारणा भी है गुप्त। ज्ञान बाबा ने दे दिया है, यह सच है, यह झूठ है। यह पाप है, यह पुण्य है। बाबा आपने मुझे यह बताया किसी और ने नहीं बताया। ज्ञान मिला माना समझ आई, योग लग गया। अगर बुद्धि और बातों में फंसी होगी तो योग लगेगा नहीं।

अभी भी सभी जगह आधे लोगों को क्लास में नींद आ जाती है। क्लास में नींद आना, सिर भारी होना, योग न लगना, यह भी सजा है। अन्दर में खुशी है तो योग लग जायेगा, यह फल है। अगर अपने आप को आँख नहीं दिखायेंगे तो कमजोरी दिखाई नहीं देगी इसलिए बाबा कहता है अपना मास्टर स्वयं बनो। मैं आपकी सब बातें जानता हूँ, पर तुम मेरा बच्चा समझकर अपने को चेक करो। दूसरे के बारे में सारी बातें पता होंगी, पर मेरे में क्या कमजोरी है - यह नहीं पता रहेगा। मेरे में क्या है, जब तक यह नहीं समझा है, तो सिर भारी रहेगा। बाबा खुशी से याद आये, मैं याद न करूँ पर वो स्वयं सामने आ जाये। वो तब होगा जब धारणा पर ध्यान होगा। ज्ञान, योग फिर आ गयी धारणा अर्थात् जीवन। जीवन हमारी ओबिडियेन्ट है, वफ़ादार है, ईमानदार है। ऐसा गुप्त पुरुषार्थी, सच्चा पुरुषार्थी है, सच्चे की लगन लगी हुई है। ज्वालामुखी स्थिति हमारी ऐसी हो जो दूसरे को रोशनी मिले। जीवन गुणों में सम्पन्न हो, सदा ही चढ़ती कला से औरों का भला होता रहे। कहाँ किसी हालत में रुकती कला हुई नहीं है, न कोई रोक सकता है। रोकने वाले रोकेंगे, पर जाने वाला सच की नईया में बैठकर जा रहा है।

बाबा ने सच्चा बनना हमको सिखाया है। सच्चा उसको अच्छा लगता है। सच की इतनी वैल्यू हो, जिसके पास सच की वैल्यू है उसमें शक्ति आती है मायाजीत बनने की।

अभी भी आँखे नहीं खुलेंगी तो जब धर्मराज सामने आयेगा तब तो आँखें खुलेंगी, वरदाता ने वरदान दे दिया। ब्रह्मा बाप भी कहेगा मात-पिता शिक्षक, सखा सब पार्ट पूरा कर दिया। अभी तुम अपने सत्य धर्म में रहो, शान्त रहो, सच्चाई से काम करो। सच्चाई से रहने में शक्ति आती है। ईश्वरीय सेवा है, सबका भला होने वाला है, हुआ ही पड़ा है। मुझे क्या करना है, धारणा में सच्चाई इतनी जो औरों को बल मिले। मास्टर बनकर अपनी इतनी चेकिंग करनी है। मेरे में कोई कमी न हो। मैं आत्मा साक्षी बनकर, देह से न्यारी रहूँ। जो सच्चा है उसे कोई चिन्ता नहीं, उसको कोई सबूत नहीं चाहिए। भगवान उसका सबूत देता है फिर दुनिया देती है।

कुछ भी माथा चलाने से नहीं होगा। दिमाग ठण्डा, दिल सच्चा, स्वभाव मधुर रहे। कराने वाला करा रहा है, चलाने वाला चला रहा है। उसको जो नहीं जानता है वो खुद अपना भाग्य, भाग्य विधाता से नहीं लेता। बाबा ने कहा है अपना ऐसा रिकार्ड अच्छा रखो, चरित्र इतना ऊंचा हो तब योग अच्छा हो।

यह मेरी भावना है कि सबका भला हो, अगर बुरा देखने सुनने बैठ गये, सुना फिर बुद्धि में रखा फिर किसी को सुनाया तो कौन से खाते में गया! इसमें फिर सिर भारी होता है, फिर कर्म का खाता बन जाता है। पुराने तो खत्म हुए नहीं, नया बन गया। इससे मेरी कमजोरी अन्दर दब गयी और ही दूसरी कमजोरी आ गयी। जो सबके गुण देखता है, उससे रिटर्न में सब गुण आ जायेंगे। उसके पास और कुछ देखने, सुनने का टाइम ही नहीं है।

कान और आँख को देखो। सिर्फ यही चेक करो कि यह सुनते क्या हैं और ये देखते क्या हैं। दोनों कानों से जो आवाज अन्दर जाता है, फिर दिमाग में गया, फिर दिल को लगा फिर मुख चला। यहाँ से ही सारा परिवर्तन होता है। सिर्फ दो कान और आँख देख लो। अन्तर्मुखी बन जाते हैं तो आँखें क्या देखें, खुली है पर क्या देखें, क्या सुनें, काम की बात ही नहीं है। आँखें, कान बन्द हैं तो मुख मुस्कराने लगता है।

आजकल तो पुरानी बात मिटाते ही नहीं हैं, कल की भी बात मिटा दो। गलत लिखकर फिर मिटाना भी रांग है। इतना अक्ल होना चाहिए, हमारी पढ़ाई इतनी अच्छी है। हर कर्म ऑटोमेटिक लिखता जाता है। अच्छा, जरा सा हो भी जाये तो उसे तुरन्त मिटा दो। स्टूडेन्ट अगर स्टडी में सुस्ती करता है, तो वो पास कैसे होगा। तो बाबा ने जो सुनाया, सारा दिन उसे पहले अपने को सुनाओ फिर औरों को सुनाओ। राजाई लेनी हो तो इन आँख और कान द्वारा लेंगे, गँवायेंगे भी इनके द्वारा। अन्तर्मुखी सदा सुखी रहेगा।

स्थिति ऐसी रहे, समर्पण जीवन है, मेरा कुछ नहीं है, सफल हुआ पड़ा है। जब आप चढ़ती कला में होंगे तब सर्वगुण आयेंगे फिर 16 कलायें भी आ जायेंगी। सबके सहयोग से बाबा का कार्य सफल होगा फिर उड़ती कला हो जायेगी।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

“बाप की सब शिक्षाओं को सहज धारण करने के लिए अन्तर्मुखी बनो”

1) बाबा द्वारा मिली हुई मीठी शिक्षाओं को धारण करने मे अन्तर्मुखता बहुत मदद करती है। अन्तर्मुखता इशारा देती - बाबा जो कहता है वह करना है। बाहरमुखता में याद करना पड़ता, अन्तर्मुखता याद की ओर खींचती है। हमारा पुरुषार्थ नेचुरल सहज हो जाता है। अन्तर्मुखी रहने से हमारे जीवन में दिव्यता और अलौकिकता नेचुरल दिखाई देती है।

2) अन्तर्मुखता का रस वैरागी बना देता है, उन्हें बाहर की कोई भी वस्तु अपनी ओर खींच नहीं सकती। बाहरमुखता वाले को अनेक बाहर के रस खींचते रहते हैं। ब्राह्मणों में हम सर्वोत्तम, कुल भूषण बनें, जब यह अटेन्शन रहता है तब जीवन में दिव्यता और अलौकिकता दिखाई देती है। 3- ब्राह्मण बनने से जीवन में पवित्रता आ गई। आहार व्यवहार सब चेंज हो गया। बाहर वालों की भेंट में जीवन में परिवर्तन आ गया। लेकिन बाबा की भेंट में कहेंगे अभी इसका पुरुषार्थ साधारण है। तो क्या परिवर्तन चाहिए? जीवन में दिव्यता और अलौकिकता हो। संगमयुगी ब्राह्मण बनें, पतित विकारी जीवन से निकल आये यह बहुत अच्छा लेकिन ब्राह्मण सो देवता बनने के लक्षण हमारे में आ जायें, वो संस्कार दिखाई पड़ें।

4) ऊंचे ते ऊंचा बाप हमें ऊंचे ते ऊंचा बनाता है। इस बात को ख्याल में रखें तो हमसे कोई भी ऐसी बात हो नहीं सकती। जब हम अन्तर्मुखी होंगे तब ही ऐसी चेकिंग हो सकती है। हम अपना सच्चा चार्ट तब ही रख सकते जब अन्तर्मुखी हैं। बाहरमुखता छोटी-छोटी बातों के प्रभाव में खींच लेती है। अन्तर्मुखता इनसे मुक्त रखती है। अन्तर्मुखता हमें मजबूत कर देती है। देखते हुए भी नहीं देखते। उनकी अटैचमेन्ट छूट जाती है।

5) जितना हम आगे बढ़ते रहेंगे उतना परीक्षायें आती रहेंगी, लेकिन परीक्षा शब्द भी क्यों? यह बड़ी बात नहीं है। बाबा पढ़ा रहा है, हम पढ़ रहे हैं, जो करेगा सो पायेगा - यह शब्द भी नहीं कह सकते। यह भी जैसे अन्दर से खराब शब्द बोलना है। अन्दर से जानते हैं हर एक के कर्म का हिसाब-किताब है। हम और ही सीखते हैं, मैं ऐसी गलती न करूँ। उनसे नफरत नहीं आती लेकिन हम सावधान हो जाते हैं।

6) ब्राह्मणों को लॉ फुल बनकर रहना है। लॉ पर चलने से लव पैदा हो जाता है। जो ईश्वरीय कायदे में चलते हैं, कुदरती लवफुल बन जाते हैं। वे हर एक को सच्चे प्रेम का अनुभव करायेंगे। अगर हम लॉ को तोड़ देते हैं तो प्यार नहीं मिल सकता। मर्यादा पुरुषोत्तम बनने की शिक्षाओं पर हम नहीं चलते हैं तो लव नहीं मिलता। प्रेम भी रूखा-रूखा नहीं, लेकिन रिगार्ड सहित प्रेम हो।

7) जिसने अपने पुरुषार्थ की लेवल अच्छी रखी है उनसे औरों को प्रेरणा मिलती है। हमारा बोलचाल, पुरुषार्थ साधारण न हो। हमारा लक्ष्य क्या है, यह अन्तर्मुखी होकर हम सोचें। सदा आगे बढ़ने की भावना हो। जब बाबा खींच रहा है तो कोई बात मुझे रोक नहीं सकती। पुरुषार्थ में याद का बल हो। मुख से कुछ न कहकर अन्दर से याद की सच्ची लगन हो। तो जो होना चाहिए वही होगा। अन्दर शुद्ध संकल्प की दृढ़ता हो।

8) हम सम्पूर्ण देवता बनने वाले हैं, आर्डनरी नहीं हैं। हम सबके कल्याण की कामनायें पूर्ण करने वाले हैं। जिसमें कल्याण समाया हुआ है वह कार्य होना चाहिए। किसी को खुश करने का पुरुषार्थ न हो। जब इतनी ऊंची पढ़ाई है, इतनी बड़ी युनिवर्सिटी है तो रूप को चेंज करने का अटेन्शन रखना है। जब अलौकिकता आयेगी तब ही दिव्यता आयेगी।

9) अन्तर्मुखता के बिना अटेन्शन रहीं रह सकता। अन्तर्मुखता से याद, धारणा वा ज्ञान का बल आ जाता है, और लोग क्या करते हैं यह मुझे नहीं सोचना है। करना है मुझे अपने लिए। मेरे लिए और कोई पुरुषार्थ नहीं करेगा। तो देखना है हमने अपने लिए कितना सोचा, औरों के लिए कितना सोचा। जो बहुत सोचते हैं दूसरों का, वह विश्व के मालिक कैसे बनेंगे।

10) साइलेन्स से बादशाही मिलेगी न कि सोचने से। साइलेन्स से स्वर्ग की बादशाही स्थापन होती है। जो ज्यादा सोचते हैं या बोलचाल में आते हैं, उन्हें विश्व की बादशाही मिल नहीं सकती। बाबा ने हम बच्चों की पालना तपस्या से की है। आज तक भी मधुबन में बाबा की तपस्या के वायब्रेशन हैं। हमारे रग-रग में वो संस्कार डालने के लिए बाबा ने तपस्या की है, उसके लिए त्याग किया है।

11) अन्तर्मुखता नहीं होगी तो त्याग तपस्या भी नहीं होगी। ऐसे ही चलते रहेंगे। हम जो चाहते हैं और बाबा जो चाहता है वह हमारे से मिस न हो जाय, यह ध्यान रखना है इसलिए साधारण पुरुषार्थ न हो। जो लक्ष्य मिला है, उसे प्राप्त करने का पुरुषार्थ हो।